

रुनक-झुनक रेवा-अंगना में आई  
हो-रई गगन से-फुहार हो मर्म ॥2॥

केश लगे-जैसे-कारी बदरिया  
राजरे की अजब-बहार हो मर्म

रुनक-झुनक----

रेशम के लेंहगा पे-धानी चुनरिया  
कजरे की अजब-किनार हो मर्म

रुनक-झुनक----

नाक नथनियाँ हौले हौले-डोले  
बेंदी पे चमक अपार हो मर्म

रुनक-झुनक----

चंदन पालकी झूलो मेरी रेवा  
भौंरों की हो रही गुंजार हो मर्म

रुनक-झुनक----

दुखिया "श्रीबाबाश्री" की तुमने ओ रेवा  
घर बैठे-सुन लई पुकार हो मर्म

रुनक-झुनक-----